अन्तर्राष्ट्रीय सिख सम्मेलन

दिनांक 22.09.2016, स्थान–श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में उद्घाटन के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार का संबोधन

बिहार की पावन धरती पर देश–विदेश से आये अंतर्राष्ट्रीय सिख सम्मेलन के प्रतिनिधियों का स्वागत है। आप सभी अवगत होंगे की 30 दिसम्बर, 2016 से 10 जनवरी, 2017 तक पटना साहिब में श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी का 350वाँ प्रकाश पर्व काफी धूम धाम से मनाया जाना है। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज का जन्म 22 दिसम्बर, 1666 को पटना साहिब की पावन धरती पर हुआ था।

इस ऐतिहासिक अवसर के मद्देनजर बिहार सरकार के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सिख सम्मेलन का आयोजन पटना में दिनांक 22 सितम्बर से 24 सितम्बर, 2016 तक किया जा रहा है। इस सम्मेलन का उद्देश्य देश एवं दुनिया से सिख समाज के प्रख्यात विद्धतजन, प्रतिनिधिगण, चिन्तक, कलाकार आदि के साथ–साथ सभी समुदायो के प्रतिनिधियों को एक मंच पर लाना है जहाँ सब मिलकर सर्ववंश दानी दशमेश पिता श्री गुरू गोविन्द सिंह जी महाराज के जीवनवृत्त, उपदेश, विचार और कृत्यों को साझा कर उस पर चर्चा कर सकें ताकि आज की पीढ़ी उन उच्च आदर्शों से अवगत हो सके और प्रेरणा ले सके। यह भी उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार के द्वारा पहली बार अंतर्राष्ट्रीय सिख सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

इस सम्मेलन में दिनांक 23 एवं 24 सितम्बर 2016 को सिख धर्म साहित्य एवं संस्कृति से जुड़े चार विषयों पर देश–विदेश के विद्वानों के द्वारा परिचर्चा (Panel Discussion) की जायगी।

(i) "Sri Guru Govind Singhji- A spiritual savior and crusader of lights"

(ii) "Sri Guru Govind Singhji- A poet par excellence"

(iii) "Sikhism- A faith of love and humanity"

(iv) "Contribution of Sikhs to the Nation"

बिहार गौरवशाली इतिहास और संपन्न विरासत से परिपूर्ण है। इसका अपना स्वर्णिम इतिहास रहा है। यह धरती बौद्ध एवं जैन धर्मों की जन्म स्थली रही है। 2600 वर्ष पूर्व बिहार ही की धरती पर बुद्ध एवं महावीर ने मानव को अहिंसा का पाठ पढ़ाया था। इन दोनों धर्मों के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल बोधगया, राजगीर, पावापुरी, वैशाली एवं लछुआर इसी राज्य की धरती पर अवस्थित है। यह माँ सीता की भी जन्म स्थली है। महर्षि वाल्मीकि की भी धरती यही है।

राजनीतिक एवं कूटनीतिक दृष्टिकोण से भारत के इतिहास में बिहार का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। 7वीं एवं 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व में मगध एवं लिच्छवि शासकों का केन्द्र बिहार रहा है, उस काल में बिहार शक्ति, संस्कृति एवं शिक्षा के प्रतीक के रूप में जाना जाता रहा है। मौर्य काल एवं गुप्त काल भारतीय इतिहास में स्वर्णिम काल माने जाते है। साहित्य, विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र एवं भारतीय दर्शन में बिहार का योगदान श्रेष्ठ रहा है। चाहे वो चाणक्य का अर्थशास्त्र हो या आर्यभट्ट के द्वारा शून्य का आविष्कार या खगोलशास्त्र की रचना हो। नालंदा एवं विक्रमशीला विश्वविद्यालय प्राचीनकाल में न सिर्फ भारतवर्ष बल्कि पूरे विश्व के ज्ञान के केन्द्र के रूप में जाने जाते थे। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय को स्थल वर्ल्ड हेरिटेज साईट के रूप में यूनेस्को द्वारा घोषित हुआ है।

यह एक अनूठा प्रदेश है जहॉ उगते सूरज के साथ–साथ डूबते सूरज की भी पूजा छठ पर्व के दौरान की जाती है। बिहार ज्ञान एवं मोक्ष दोनों की धरती है। पूरे देश से पिण्डदान करने लोग गया आते हैं।

सूफी संस्कृति का बिहार में एक विशेष स्थान रहा है। सूफी संतों में हजरत मकदूम सर्फुद्दीन अहमद याहया मनेरी का जन्म बिहार के मनेर की धरती पर हुआ। मनेर शरीफ में आज भी उनकी याद में मजार एवं स्मारक स्थल है।

यह राज्य विविधताओं से भरा रहा है। इन विरासतों से पर्यटकों को अवगत कराने हेतु राज्य में विभिन्न पर्यटन परिपथों का विकास किया जा रहा है। इनमें बौद्ध परिपथ, रामायण परिपथ, सूफी परिपथ, जैन परिपथ, सिख परिपथ, शिव परिपथ, शक्ति परिपथ एवं गॉधी परिपथ महत्वपूर्ण है।

हमे गर्व है कि श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज का जन्म पटना में हुआ। सिख धर्म में पटना साहिब का विशेष महत्व है। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज सर्ववंश दानी, संत सिपाही, महान योद्धा, सफल नेतृत्वकर्त्ता, सामाजिक, आध्यात्मिक–राजनीतिक चिंतक, श्रेष्ठ साहित्यकार, बहुभाषी विद्वान, दया– क्षमा –प्रेम–विनम्रता–परोपकार आदि सद्गुणों से सम्पन्न एक आदर्श व्यक्तित्व थे, जिनसे प्रेरित होकर मनुष्य जीवन के उच्चतम उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ–साथ जीवन की आम समस्याओं से भी निपट सकता है। 42 वर्ष की आयु में इतने महान कार्यों को अंजाम देना किसी चमत्कार से कम नहीं है।

गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज का सारा संघर्ष दलित–शोषित मानवता की रक्षा के लिए था। दबे–कुचले लोगों को एकत्र कर **''खालसा''** का सृजन कर ऐसी अदम्य शक्तिशाली सेना तैयार की जिसने अपने समय की सबसे बड़ी सैनिक शक्ति को परास्त किया। गुरू जी महाराज ने जनता की सोई शक्ति को जगा दिया जो अपने सम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी ताकत से लड़ने में समर्थ साबित हुयी। गुरू जी संत थे और सिपाही भी थे। परंतु उनके सैनिक व्यक्तित्व पर भी उनका आध्यात्मिक व्यक्तित्व छाया रहता था।

गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज ने मनुष्य को आदर्श आचरण धारण करने के लिए प्रतिबद्ध किया। गुरू जी महाराज प्रदत्त पॉच ककार उच्च एवं आदर्श जीवन के प्रतीक हैं। 'केश' श्रेष्ठ चिंतन, 'कृपाण' शक्ति, 'कछा' सदाचार, 'कड़ा' संयम, और 'कंघा' स्वच्छता एवं निर्मलता का प्रतीक है।

महान कवि एवं भाषाविद् होना उनके व्यक्तित्व के भावुक एवं संवेदनशील पक्ष को दिखाता है। **''अकाल उसतत''**, **''जाप साहिब''**, **''जफरनामा''** **''चण्डी की वार''** जैसी कृतियों को आज भी कवि एवं विद्वान बहुत आदर करते है। गुरू जी महाराज के विद्या दरबार में 52 कवियों समेत विद्वान थे जो निरंतर श्रेष्ठ साहित्य–सृजन एवं प्राचीन ग्रंथों के अनुवाद कार्य में लगे रहते थे। यही नहीं गुरू जी महाराज संस्कृत, अरबी, फारसी, ब्रज, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं में पारंगत थे।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से बिहार में तख्त श्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के साथ–साथ गुरू का बाग, पटना सिटि, बाल लीला साहिब पटना, गुरूद्वारा हाण्डी साहिब, दानापुर, गुरू तेग बहादुर गुरूद्वारा, गायघाट, गुरू नानक कुण्ड, राजगीर, नालन्दा, गुरूद्वारा पच्चीसंगत, मुंगेर के अलावा आरा, कटिहार, गया, नवादा, सासाराम, भागलपुर में अनेक गुरूद्वारे एवं धार्मिक स्थल मौजूद है।

आज भी सिख कौम को भाईचारा एवं बहादुरी की मिसाल के रूप में देखा जाता है। भारत की आबादी का 2% हिस्सा होते हुए भी भारत की सेना में इनकी संख्या 20% है। इस कौम के वीर सपूतों ने आजादी के बाद अब तक 5 परमवीर चक्र, 40 महावीर चक्र एवं 209 वीर चक्र प्राप्त किए है। राजनीति, प्रशासन, खेल, सांस्कृतिक क्षेत्र आदि में सिख समुदाय का योगदान अतुलनीय है। देश की हरित क्रांति में सिखों का योगदान उत्कृष्ट है और दूध की उपलब्धता में देश को आत्मनिर्भर बनाने में भी सिखों ने महती भूमिका निभायी है।

श्री गुरू गोविन्द्र सिंह जी महाराज के 350वें प्रकाश पर्व को यादगार बनाने हेतु राज्य सरकार के द्वारा व्यापक पैमाने पर तैयारियाँ की जा रही है। इस अवसर पर आनेवाले श्रद्धालुओं की सभी आवश्यकताओं का विशेष घ्यान रखा जायेगा ताकि उन्हे किसी प्रकार की असुविधा न हो। प्रकाशोत्सव में आनेवाले श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु पर्यटन विभाग, बिहार के द्वारा एक वेबसाईट www.350thprakashparv.bih.nic.in की शुरूआत की गयी है, जिसपर पटना एवं आसपास अवस्थित पर्यटन स्थल तथा आधारभूत सुविधाओं की जानकारी उपलब्ध है। जिस Mobile App को आज लॉच किया गया है उसके उपयोग से आगन्तुकगण पटना में अवस्थित सुविधाओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

यह अति प्रसन्नता का विषय है कि गुरूजी के अतुलनीय व्यक्तित्व और योगदान पर परिचर्चा करने हेतु देश–विदेश से 150–200 गणमान्य प्रतिनिधि यहाँ उपस्थित हुए हैं। मुझे आशा है कि निर्धारित चार विषयों पर बहुआयामी एवं लाभकारी परिचर्चा होगी जो प्रतिभागियों के साथ–साथ आमजन का भी प्रबोधन करेगा।

सहअस्तित्व, संवेदनशीलता, सहिष्णुता और सद्भावना हमारी संस्कृति की पहचान है। सभी समुदाय हमारे देश के अभिन्न अंग हैं। भारत के लोग शांति एवं सद्भाव से रहना चाहते हैं। हमे सभी संस्कृतियों को फलने–फूलने देना चाहिए तभी हमारी शताब्दियों पुरानी विविधता, सहनशीलता तथा समरसता की विरासत प्रबल होगी। ऐसे आयोजन युवाओं को अपने इतिहास और विरासत को जानने और समझने का मौका देती है। अपने अतीत को जानकर ही हम अपना भविष्य संवार सकते है। आइये इस अवसर का लाभ उठाकर हम सर्ववंश दानी दशमेश पिता श्री गुरू गोविन्द सिंह जी महाराज की जीवनी, उपदेशों, विचारों और कृत्यों से प्रेरणा लेकर अपने समाज को और बेहतर और खुशहाल बनायें।

इस सम्मेलन में आये प्रतिनिधियों को तख्त श्री हरमंदिर जी साहिब गुरूद्वारा एवं अन्य धार्मिक स्थलों के परिभ्रमण की भी व्यवस्था की गयी है। दिनांक 23.09.2016 की संध्या में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया है। आप सभी बिहार के सम्मानित अतिथि हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि जनवरी 2017 में आयोजित प्रकाशोत्सव में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने हेतु अन्य श्रद्धालुओं को भी प्रेरित करें। मुझे पूरा विश्वास है कि इस सम्मेलन से देश में प्रेम, सौहार्द, सद्भावना तथा सहिष्णुता का संदेश जायेगा। अंत में मैं पुनः आप सब का स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि बिहार में आपका आना यादगार रहेगा।